2 कन्यादान

– ऋतुराज

पाठ की रूपरेखा

'कन्यादान' कविता में माँ बेटी को स्त्री के परंपरागत 'आदर्श' रूप से हटकर सीख दे रही है। कवि का मानना है कि समाज-व्यवस्था द्‌वारा स्त्रियों के लिए आचरण संबंधी जो प्रतिमान गढ़ लिए जाते हैं, वे आदर्श के मुलम्मे में बंधन होते हैं। 'कोमलता' के गौरव में 'कमज़ोरी' का उपहास छिपा रहता है। लड़की जैसा न दिखाई देने में इसी आदर्शीकरण का प्रतिकार है। बेटी माँ के सबसे निकट और उसके सुख-दुख की साथी होती है। इसी कारण उसे अंतिम पूँजी कहा गया है। कविता में कोरी भावुकता नहीं बल्कि माँ के संचित अनुभवों की पीड़ा की प्रामाणिक अभिव्यक्ति है। इस छोटी-सी कविता में स्त्री-जीवन के प्रति ऋतुराज जी की गहरी संवेदनशीलता अभिव्यक्त हुई है।

पाठ का सार

प्रस्तुत कविता में माँ, बेटी को स्त्री के परंपरागत 'आदर्श' रूप से हटकर जीने की सीख दे रही है। कवि का मानना है कि समाज-व्यवस्था द्‌वारा स्त्रियों के लिए आचरण संबंधी जो प्रतिमान गढ़ लिए जाते हैं वे आदर्श के मुलम्में में बँधे होते हैं। 'कोमलता' के गौरव में 'कमजोरी' का उपहास छिपा रहता है। लड़की जैसा न दिखाई देने में इसी आदर्शीकरण का प्रतिकार है। बेटी माँ के सबसे निकट और उसके सुख-दुख की साथी होती है। इसी कारण उसे अंतिम पूँजी कहा गया है। कविता में कोरी भावुकता नहीं बल्कि माँ के संचित अनुभवों की पीड़ा की प्रामाणिक अभिव्यक्ति है। इस छोटी-सी कविता में स्त्री जीवन के प्रति ऋतुराज जी की गहरी संवेदनशीलता अभिव्यक्त हुई है।

माँ अपनी बेटी को विवाह के समय सीख दे रही है और अपनी अंतर्वेदना को प्रकट कर रही है। माँ की वेदना कितनी तीव्र है, इसे बताने के लिए प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती। वह पीड़ा स्वाभाविक होती है। माँ को ऐसा लग रहा है कि बेटी उसकी अंतिम बची पूँजी है। उसे भी वह दान में दे रही है। माँ के अनुसार उसकी बेटी अभी सयानी, समझदार नहीं हुई है वह तो भोली, अति सरल है। वह सुख की कल्पनाओं को लिए दुख को प्रकट करना नहीं जानती है, अर्थात् बाह्य-जीवन के सुख-दुखों से अभी अपरिचित ही है। माँ बेटी को सीख देती है, सावधान कर रही है कि पानी में झाँककर अपने चेहरे के सौंदर्य को देखकर अधिक इतराना मत, खुश मत होना। इससे आग की तरह सावधानी बरतना। आग रोटियाँ सेंकने के लिए होती हैं, स्वयं जलने के लिए नहीं। वस्त्र और आभूषण शब्दों के भ्रमजाल की तरह हैं, उनके लालच में मत पड़ना। ये सब स्त्री-जीवन को बंधन में डालने का कारण बनते हैं। माँ ने बताया कि लड़की की तरह मर्यादित तो रहना परंतु लड़की की तरह केवल भोली बनकर मत रहना। हर तरह से सावधान रहना, सजग रहना। जीवन की हर परिस्थितियों का निर्भय होकर सामना करना।

काव्यांशों के अर्थ

① कितना प्रामाणिक था उसका दुख
लड़की को दान में देते वक्त
जैसे वही उसकी अंतिम पूँजी हो
लड़की अभी सयानी नहीं थी
अभी इतनी भोली सरल थी
कि उसे सुख का आभास तो होता था
लेकिन दुख बाँचना नहीं आता था
पाठिका थी वह धुँधले प्रकाश की
कुछ तुकों और कुछ लयबद्‌ध पंक्तियों की

(पृष्ठ सं. 50)

शब्दार्थ

प्रमाणिक–स्वाभाविक, यथार्थ। **पूँजी**–धन। **सयानी**–समझदार, योग्य। **आभास**–प्रतीत होना। **बाँचना**–पढ़ना, समझ-पाना। **पाठिका**–पढ़ने वाली, समझने वाली। **लयबद्‌ध**–लय में आबद्‌ध।

अर्थ

कवि ने कन्या-विवाह के बाद बेटी को उसकी ससुराल भेजते समय माँ की अंतर्वेदना को चित्रित किया है। माँ को आभास होता है कि उसने अपनी बची पूँजी को भी दान कर दिया। उसके पास कुछ भी शेष नहीं बचा है जिसे अपना समझ सके।

उसके हृदय से स्वयं ही उद्‌गार फूट पड़ते हैं कि बेटी अभी सयानी नहीं हुई है। वह इतनी भोली है कि सुख की कल्पना तो करती है परंतु जीवन में आने वाले दुखों से अभी अपरिचित है। वह आने वाले दुखों को कैसे सहन कर सकेगी। वह तो विवाह से संबंधित सुखों की काल्पनिक इच्छा में जी रही थी, जो अस्पष्ट थी। वह तुकों और लयबद्‌ध पंक्तियों को सरलता से, सहजता से पढ़ना जानती थी। काव्य के गंभीर भावों को समझने में असमर्थ थी। अतः बेटी ससुराल में सहज सुख की कल्पना कर रही थी, जो अस्पष्ट थी। ससुराल की कठिनाइयों से परिचित नहीं थी।

② माँ ने कहा पानी में झाँककर
अपने चेहरे पर मत रीझना
आग रोटियाँ सेंकने के लिए है
जलने के लिए नहीं

वस्त्र और आभूषण शाब्दिक भ्रमों की तरह
बंधन हैं स्त्री जीवन के
माँ ने कहा लड़की होना
पर लड़की जैसी दिखाई मत देना।

(पृष्ठ सं. 50)

शब्दार्थ

रीझना–प्रसन्न होना। **आभूषण**–अलंकार, गहने।

अर्थ

माँ ने बेटी को विदा करते समय सावधान किया है कि अपने सौंदर्य पर इतराना मत, सजग रहना और किसी के प्रशंसात्मक शब्दों में न उलझकर, अपने जीवन को बंधन-मुक्त रखना।

माँ समझा रही है कि पानी में अपने सौंदर्य को देखकर इतराने का प्रयास मत करना। इससे आग के समान सावधान रहना। आग रोटियाँ सेंकने के लिए होती है, स्वयं जलने के लिए नहीं। अतः सभी कार्य करते समय अति सावधानी बरतना। शाब्दिक भ्रम की तरह अर्थात् प्रशंसात्मक शब्दों की तरह वस्त्रों और आभूषणों के भ्रम में मत पड़ना। यही भ्रम स्नेह का आभास कराकर बंधन में जकड़े रहेंगे। तुम लड़की की तरह मर्यादित व्यवहार करना, किंतु सामान्य एवं कमजोर लड़की की तरह अत्याचार सहने के लिए दुर्बलता मत दिखाना। तुम हर तरह के शोषण का साहसपूर्वक मुकाबला करना।

अभ्यास प्रश्नोत्तर

I. बहुविकल्पीय प्रश्न

1. इस कविता में किसके दुख का वर्णन किया गया है?
   (*i*) कवि के (*ii*) लड़की के (*iii*) लड़की की माँ के (*iv*) ससुराल वालों के
2. कवि ने माँ के दुख को प्रामाणिक क्यों बताया है?
   (*i*) क्योंकि माँ का दुख प्रामाणिक होता है। (*ii*) बेटी का कन्यादान माँ के लिए अत्यंत पीड़ादायक होता है।
   (*iii*) माँ का दुख सबसे बड़ा और अतुलनीय होता है। (*iv*) उपर्युक्त सभी कथन सही।
3. 'लड़की अभी सयानी नहीं थी' पंक्ति का क्या आशय है?
   (*i*) लड़की नाबालिग थी। (*ii*) लड़की मानसिक रूप से अपरिपक्व थी।
   (*iii*) लड़की अभी तक पढ़ी-लिखी नहीं थी। (*iv*) इनमें से कोई नहीं।
4. 'पाठिका थी वह धुँधले प्रकाश की' पंक्ति में कवि ने पाठिका किसे कहा है?
   (*i*) लड़की को (*ii*) लड़की की माँ को (*iii*) लड़की की सहेली को (*iv*) लड़की की छोटी बहन को
5. 'जैसे वही उसकी अंतिम पूँजी हो' पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?
   (*i*) श्लेष (*ii*) उत्प्रेक्षा (*iii*) यमक (*iv*) उपमा
6. माँ ने अपनी बेटी को क्या सीख दी?
   (*i*) स्वयं को कमज़ोर मत समझना। (*ii*) अपने सौंदर्य पर इतराने का प्रयास मत करना।
   (*iii*) हर तरह के शोषण का साहसपूर्ण मुकाबला करना। (*iv*) उपर्युक्त सभी कथन सत्य।
7. कवि ने शाब्दिक भ्रम किसे कहा है?
   (*i*) वस्त्र और आभूषणों को (*ii*) आग और पानी को
   (*iii*) अपनी प्रशंसा सुनने को (*iv*) इनमें से कोई नहीं

8. माँ ने बेटी को 'अपने चेहरे पर मत रीझना' क्यों कहा?

(*i*) नववधू अपनी सुंदरता की प्रशंसा सुन ससुराल वालों द्वारा छली जाती है।

(*ii*) प्रशंसा के बंधन में बँधकर उसे कमज़ोर बनकर रहना पड़ता है।

(*iii*) सुंदरता चिरस्थायी नहीं होती है।

(*iv*) उपर्युक्त सभी कथन सही

9. 'आग रोटियाँ सेंकने के लिए है, जलने के लिए नहीं' इस पंक्ति द्वारा माँ ने किस समस्या की ओर इशारा किया है?

(*i*) ईंधन की समस्या (*ii*) घर के काम-काज न कर पाना

(*iii*) नववधू को जलाकर मार डालना (*iv*) पढ़ा-लिखा न होना

10. 'वस्त्र और आभूषण शाब्दिक भ्रमों की तरह बंधन हैं स्त्री-जीवन के' पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

(*i*) यमक (*ii*) उपमा (*iii*) श्लेष (*iv*) अनुप्रास

उत्तर– 1. (*iii*) 2. (*ii*) 3. (*ii*) 4. (*i*) 5. (*ii*) 6. (*iv*)
7. (*i*) 8. (*iv*) 9. (*iii*) 10. (*ii*)

II. काव्यबोध संबंधी प्रश्न (2 अंक)

1. 'कन्यादान' कविता में कवि आग जलाने के संदर्भ में क्या संदेश देता है? (*CBSE Sample Paper* 2016)

उत्तर माँ बेटी को सीख देती है कि वह अपनी सुरक्षा पर आँच न आने दे। वह समझदारी से ऐसी स्थितियाँ बनाए कि कोई उस पर अन्याय और अत्याचार न कर सके।

2. 'कन्यादान' कविता में कवि की क्या प्रेरणा है?

उत्तर कन्यादान कविता के माध्यम से कवि स्त्री-जगत् के मन में समायी भावना 'कन्या तो दान के लिए है'–से मुक्त होकर नए मूल्य स्थापित करने प्रेरणा दे रहा है। कन्या बेचारी है, निरीह है, स्त्री जाति मात्र उपयोग के लिए है–ऐसी प्रचलित भावना से नारी जाति को मुक्त होने के लिए प्रेरित कर रहा है।

कवि के अनुसार 'नारी सौंदर्य की प्रतिमूर्ति है' की कोमल भावना से नारी को मुक्त होकर ऐसे आदर्श स्थापित करना उचित है कि मानव जगत् के मन में पल रही दकियानूसी भावनाएँ पलायन कर जाएँ।

3. कविता के अनुसार वर्तमान में स्त्रियों की क्या स्थिति है?

उत्तर कविता के माध्यम से कवि ने स्त्रियों की वर्तमान स्थिति की ओर पाठकों का ध्यान आकृष्ट करते हुए कहता है कि आज स्त्रियाँ दान करने की वस्तु बन कर रह गई हैं। एक तरफ इन्हें दान करके पुरुष प्रधान समाज पुण्य प्राप्त कर लेने का जयघोष करता तो दूसरी तरफ दान स्वरूप इन्हें प्राप्त करने वाले लोग इनको अपनी सुविधानुसार लाखों तरह के आचरण संबंधी प्रतिमान गढ़कर उसमें कैद कर देते हैं।

यहाँ तक कि स्नेह में पाली-पोषी गईं बेटियाँ आज ससुराल जाने पर इतनी प्रताड़ित की जाती हैं कि वे स्वयं ही आग में जलने के लिए विवश हो जाती हैं, उन्हें ऐसा करने के लिए विवश कर दिया जाता है।

4. 'कन्यादान' कविता में माँ ने बेटी को जो सीख दी है क्या वह आज के युग के अनुकूल है? पक्ष या विपक्ष में तर्क देकर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 'कन्यादान' कविता में माँ के माध्यम से कवि ने स्त्री-जाति के शोषण की व्यथा-कथा से आहत होकर ही सीख दी है। आधुनिक समाज में एक ओर तो नारी को अनेक उपमानों से सम्मानित किया जाता है तो दूसरी ओर यथार्थ जीवन में नारी से विपरीत व्यवहार किया जाता है। कविवर मैथिली शरण गुप्त नारी के शोषित रूप को प्रस्तुत कर नारी के प्रति सहृदयता व्यक्त करते हैं कि 'अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी .....' तो कवि जयशंकर प्रसाद जी नारी को श्रद्धा का प्रतीक मानकर कहते हैं कि–'नारी केवल तुम श्रद्धा हो .....। कहकर उसके प्रति सम्मान व्यक्त करते हैं। फिर भी हमेशा से दबी चली आ रही नारी के प्रति शोषण प्रवृत्ति से 'कन्यादान' कविता की माँ परिचित है। आधुनिक युग में कहा तो जाता है कि 'कन्या' सृष्टि की जननी है, सौंदर्य की अवतार है। उन्हीं को आग में धकेला जाता है।

अतः बेटी को सावधान करना आधुनिक युग के अनुकूल है।

5. "लड़की जैसी दिखाई मत देना" यह आचरण लड़कियों में दिखने लगा है। इस बदलते हुए लड़कियों के स्वभाव पर टिप्पणी कीजिए?

उत्तर 'लड़की जैसी दिखाई मत देना' ऐसा प्रभाव आज लड़कियों में घर कर गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि माँ की ऐसी सीख की गूँज सर्वत्र दिखाई दे रही है। इसका ऐसा प्रभाव पड़ा है कि घर से बाहर तक लड़कियाँ इतनी प्रभावी हो गई हैं कि अब पुरुष विवश हो गया है। पुरुष ने रसोई में काम करना सीख लिया है। इतना ही नहीं, पुरुष को अपने अस्तित्व की चिंता सताने लगी है।

6. वैवाहिक-जीवन की त्रासदी क्या है? नव-विवाहिता को ऐसा कब लगने लगता है कि वैवाहिक जीवन मर्यादाओं का बंधन-मात्र है?

उत्तर विवाह से पूर्व लड़की अनेक कल्पनाओं को सँजोए रहती है। विवाह के बाद उसकी कामनाओं पर पानी फिरता दिखाई देता है तो उसे जीवन त्रासदियों से भरा प्रतीत होने लगता है। यही उसके वैवाहिक जीवन की त्रासदी है।

उसकी अपेक्षाओं के अनुसार वैवाहिक-जीवन नहीं होता है और पारिवारिक, सामाजिक मर्यादाओं के बंधन में इतना जकड़ दिया जाता है कि पितृगृह में स्नेह से पली लड़की घुटन का अनुभव करने लगती है। उस समय ऐसा लगता है कि संपूर्ण परिवार की मर्यादा नव-विवाहिता के मर्यादा पालन में है। परिवार का प्रत्येक जन उसे ही सीख देता दिखाई देता है। तब लगता है कि वैवाहिक जीवन मर्यादाओं का बंधन मात्र है।

7. बेटी, अभी सयानी नहीं थी' में माँ की चिंता क्या है? 'कन्यादान' कविता के आधार पर लिखिए।

(*CBSE Delhi* 2016)

अथवा

'बेटी अभी सयानी नहीं थी'-'कन्यादान' कविता के आधार पर प्रस्तुत पंक्तियों में अभिव्यक्त माँ की चिंता का कारण लिखिए। (*CBSE Sample Paper* 2019-20)

उत्तर 'बेटी अभी सयानी नहीं थी' में माँ की चिंता यह थी कि–

(*i*) बेटी को अभी दुनियादारी की समझ नहीं थी।

(*ii*) बेटी अभी भोली और सरल थी। वह आग का दुरुपयोग कर सकती थी।

(*iii*) बेटी अपने रूप-सौंदर्य पर सम्मोहित हो सकती थी।

(*iv*) बेटी वस्त्राभूषणों के भ्रम में फँसकर शोषण का शिकार हो सकती थी।

8. 'कन्यादान' कविता में आए व्यंग्यों को स्पष्ट कीजिए?

उत्तर कवि ने 'कन्यादान' कविता में सामान्य रूप से बड़ी विन्रमता और सहजता से वर्तमान समाज पर व्यंग्य किए हैं, किंतु इन व्यंग्यों में तीक्ष्णता नहीं है। कविता में आए व्यंग्य इस प्रकार हैं–**'अपने चेहरे पर मत रीझना'**–यहाँ माँ ने अपनी बेटी को सीख दी है साथ ही उन लड़कियों के प्रति व्यंग्य है जो अपने सौंदर्य के कारण इतराती, इठलाती हैं।

'वस्त्र और आभूषण शाब्दिक भ्रमों की तरह बंधन हैं स्त्री जीवन के'–यहाँ कवि ने आभूषण-प्रिय नारी जगत् पर व्यंग्य किया है और सावधान किया है। शब्द-जाल की तरह वस्त्र-आभूषण भी नारी को किस प्रकार भ्रमित करते हैं, नारी आभूषणों के लिए क्या-क्या नहीं करती है–पर प्रकाश डाला गया है।

इस तरह कवि ने नारी और समाज की सोच पर सहज-रूप में व्यंग्य किया है।

9. 'कन्यादान' कविता में किसके दुख की बात की गई है और क्यों? (*CBSE Delhi* 2015)

उत्तर 'कन्यादान' कविता में माँ के दुख की बात कही गई है क्योंकि बेटी के अलावा माँ का कोई और सहारा नहीं है। वह (माँ) बेटी के सहारे अपनी ज़िंदगी बिता रही थी। बेटी माँ की संचित पूँजी के समान थी। उससे अलग होने पर माँ का दुखी होना स्वाभाविक था।

10. 'कन्यादान' कविता में वस्त्र और आभूषणों को शाब्दिक-भ्रम क्यों कहा गया है? (*CBSE Delhi* 2016)

(*CBSE Sample Paper,* 2017-18)

उत्तर 'कन्यादान' कविता में वस्त्र और आभूषणों को शाब्दिक-भ्रम इसलिए कहा गया है क्योंकि नववधू, इसके आकर्षण में फँसकर मुग्ध हो जाती है। इसी की आड़ में ससुराल वाले उसका शोषण करते हैं।

11. 'कन्यादान' कविता में माँ ने बेटी को ऐसा क्यों कहा कि लड़की होना पर लड़की जैसी दिखाई मत देना।

(*CBSE All India* 2016)

उत्तर 'लड़की होना पर लड़की जैसी मत दिखाई देना'– माँ ने अपनी बेटी से ऐसा इसलिए कहा है ताकि ससुराल पक्ष के लोगों के अत्याचार का मुकाबला करने के लिए मानसिक रूप से मज़बूत होने के क्रम में बेटी नारी-सुलभ गुण न खो बैठे। अर्थात वह त्याग, मोह, ममता, उपकार जैसे गुण बनाए रखे।

12. 'कन्यादान' कविता में माँ ने बेटी को क्या-क्या सीख दी? (*CBSE Delhi* 2015)

उत्तर 'कन्यादान' कविता में माँ ने बेटी को निम्नांकित सीख दी–

(क) अपनी सुंदरता और कोमलता पर आत्म-मोहित मत होना।

(ख) आग का प्रयोग रोटियाँ सेंकने के लिए करना, जलने के लिए नहीं।

(ग) वस्त्र-आभूषणों के भ्रम में मत पड़ना।

(घ) लड़की बनी रहना पर लड़की जैसी मत दिखाई देना।

13. 'कन्या' के साथ दान के औचित्य पर अपने विचार लिखिए। (*CBSE Delhi* 2015)

उत्तर 'कन्या' के साथ 'दान' की बात करने से कन्या और महिला समाज के अस्तित्व को चोट पहुँचती है। कन्या कोई वस्तु नहीं, जिसे उठाया और जिस किसी को चाहा, दान कर दिया। कन्या के साथ दान का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए।

14. 'कन्यादान' कविता में किसे दुख बाँचना नहीं आता था और क्यों? (*CBSE All India* 2015)

उत्तर 'कन्यादान' कविता में बेटी को दुख बाँचना नहीं आता क्योंकि अभी वह सयानी नहीं है। उसे समाज में छिपे छल-कपट, मिथ्या, वंचना आदि का ज्ञान नहीं है। वह दुखों को चुपचाप सहन करना जानती है।

15. 'कन्यादान' कविता की माँ परंपरागत माँ से कैसे भिन्न है? (*CBSE All India* 2015)

उत्तर 'कन्यादान' कविता की माँ परंपरागत माँ से इस तरह भिन्न है–

(क) माँ उसे लड़की जैसा न दिखने की सीख देती है।

(ख) माँ उसे आग का प्रयोग सिर्फ़ रोटियाँ पकाने के लिए करने को कहती है।

(ग) वह उसे आभूषण, वस्त्र आदि के लोभ से बचने के लिए कहती है।

(घ) वह उसे नारी सुलभ गुण बनाए रखने की सीख देती है।

16. माँ की सीख में समाज की कौन-सी कुरीतियों की ओर संकेत किया गया है? (*All India* 2015)

उत्तर माँ की सीख में समाज में फैली निम्नलिखित कुरीतियों की ओर संकेत किया गया है–

(क) परिवार में अधिक विनम्र, मृदुभाषिणी और कमज़ोर बहू को प्रताड़ित किया जाता है।

(ख) कम दहेज मिलने की वजह से बहुओं को छुटकारा पाने के लिए आग के हवाले कर दिया जाता है।

(ग) वस्त्राभूषणों के भ्रमजाल में बहू को उलझा दिया जाता है।

17. 'लड़की जैसी दिखाई मत देना' यह आचरण अब बदलने लगा है – इस पर अपने विचार लिखिए।

(*Delhi* 2017)

उत्तर 'लड़की जैसी दिखाई मत देना' – इस पंक्ति में लाक्षणिकता का गुण विद्यमान है। इसके माध्यम से माँ स्वीकार करती है कि परिवार व समाज को बनाए रखने वाले गुण यानी कोमलता, सुंदरता, सहनशीलता, ममता आदि का लड़कियों में होना अनिवार्य है, किंतु मात्र इन्हीं गुणों को समेटे हुए लड़कियों का व्यक्तित्व उसे कमज़ोर-सा प्रतीत होता है। अत: वह इसे नकार रही है। उसका मानना है कि लड़कियों में समाज की विपरीत परस्थितियों से जूझने की क्षमता भी होनी चाहिए। हालाँकि बदलते परिवेश में लड़कियाँ पहले की अपेक्षाकृत काफी आत्मनिर्भर होती जा रही हैं, जो कि मेरे विचार से सकारात्मक बदलाव है।

18. बेटी को 'अंतिम पूँजी' क्यों कहा गया है? (*Delhi* 2017)

उत्तर बेटी को माँ की अंतिम पूँजी इसलिए कहा गया है कि प्राय: वह अपने सारे सुख-दुख उसी के साथ बाँटती है। वही उसके सबसे निकट होती है और वही उसकी साथी भी होती है।

19. 'कन्यादान' कविता में माँ ने बेटी को अपने चेहरे पर न रीझने की सलाह क्यों दी है? (*All India* 2017)

उत्तर प्राय: महिलाएँ अपनी सुंदरता की प्रशंसा सुरकर प्रसन्न हो जाती हैं और इसके बंधन में बँधकर परंपराओं के निर्वाह को ही अपने जीवन की सार्थकता समझ बैठती हैं। वे अपने वास्तविक एवं आंतरिक गुणों को विस्मृत कर देती हैं। फलत: समाज में शोषण का शिकार बनती हैं।

20. माँ का कौन-सा दुख प्रामाणिक था, कैसे? (*All India* 2017)

उत्तर जिस बेटी को माँ बड़े जतन से पालन-पोषण करके बड़ी करती है उसी बेटी को किसी अन्य हाथों में सौंपते समय माँ का दुखी होना स्वाभाविक है। जाहिर है कि कन्यादान के समय उसे ऐसा महसूस होता है कि वह अपनी अंतिम पूँजी दूसरे को दे रही है।

21. 'कन्यादान' कविता में व्यक्त किन्हीं दो सामाजिक कुरीतियों का उल्लेख कीजिए।

(*CBSE All India, Delhi* 2018)

उत्तर 'कन्यादान' कविता की कुरीतियाँ हैं–

(*i*) आग का दुरुपयोग कर नववधुओं को जलाना।

(*ii*) नववधु को कमज़ोर समझकर उसका शोषण करना।

अभ्यास प्रश्न पत्र

नाम– ..... **रोल नं.** .....

समय– 20 मिनट **कुल अंक– 6**

1. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **[2×3=6]**

(क) 'कन्यादान' कविता में वस्त्र और आभूषण को शाब्दिक-भ्रम क्यों कहा गया है?

.....

.....

.....

.....

.....

(ख) 'पाठिका थी वह धुँधले प्रकाश की' का आशय स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(ग) माँ ने बेटी को सचेत करना क्यों ज़रूरी समझा?

.....

.....

.....

.....

.....

(घ) 'कन्यादान' कविता में लड़की की जो छवि प्रस्तुत की गई है, उसका अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

❑❑❑